पाषाण-प्रसंग

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा

हरियाणा राज्य औद्योगिक और बुनियादी ढांचा विकास निगम लिमिटेड

पाषाण-प्रसंग

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा

हरियाणा राज्य औद्योगिक और बुनियादी ढांचा विकास निगम लिमिटेड

THE JYOTISAR AKASHYA VAT VRIKSH

स्रोत, सामग्री, श्रम साधना

कुंडली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेस-वे के दोनों ओर स्थापित इन इक्कीस विशाल मूर्तिशिल्पों में प्रयुक्त पत्थर राजस्थान की सीमा के समीपस्थ गांव भैंसलाना की खानों से लाया गया। स्पोर्ट्स स्कूल राई सोनीपत में इक्कीस युवा होनहार कलाकारों ने पैंतीस सहायकों के साथ दिन-रात की लग्न से इन मूर्ति-शिल्पों का निर्माण मात्र पैंतालीस दिनों में किया। इनके लोकार्पण के समय माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इन प्रतिमाओं एवं शिल्पकारों की भूरि-भूरि सराहना की। उनकी अभिरुचि एवं गहन दिलचस्पी ही, इस पुस्तिका के सृजन की प्रेरणा बनी।

सत्यमेव जयते

स्वर्णिम भविष्य के पथ पर अद्भुत अतीत के पत्थर

हरियाणा विश्व का एकमात्र भू-भाग है, जहां युद्ध स्थल पर मंडराते महाकाल के बीच शाश्वत जीवन दर्शन का उद्घोष हुआ। इसलिए आश्चर्य नहीं कि दिल्ली के पश्चिम में बने 135 किलोमीटर लम्बे कुंडली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेस-वे के दोनों ओर कई अद्भुत मूर्ति-शिल्पों को स्थान दिया गया है, जो भारतीय संस्कृति के अनेक महत्वपूर्ण प्रतीकों एवं पहलुओं को दर्शाते हैं।

19 नवम्बर, 2018 को मानेसर में इस एक्सप्रेस-वे के उद्घाटन अवसर पर लगाई प्रदर्शनी में इस तथ्य से अवगत होने पर मैं भावाविभूत हो गया। मुझे बताया गया कि इन कृतियों के निर्माण के लिए हरियाणा के अतिरिक्त बिहार, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, राज्यस्थान, तमिलनाडु और पंजाब के इक्कीस कला-शिल्पियों ने पैंतालीस दिन तक अथक परिश्रम किया। इन सुंदर कला-शिल्पियों की जितनी प्रशंसा की जाए, उतनी कम है।

मैं आशा करता हूं कि इस पुस्तिका के माध्यम से इन कलाकारों के कौशल से पूरे देश के नागरिक अवगत हो पाएंगे।

इस प्रकल्प के लिए मेरी शुभकामनाएं।

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

कला कृतियां-सभ्यता की जीवंत प्रतीक

किसी भी सभ्यता व संस्कृति की सुगमतम परिचायक उसकी कलाएं होती हैं। प्राचीन भारतीय सभ्यता का उद्गम स्थल होने के कारण इसकी गौरवशाली धरोहर को संजोने का दायित्व हरियाणा पर किंचित अधिक रहता है।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 19.11.2018 को कुंडली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेस-वे के लोकार्पण के अवसर पर दोनों ओर लगाई गई 21 कला-शिल्पों में अत्यंत रुचि दिखाई थी। इससे उत्पन्न उत्साह इस पुस्तिका की रचना का आधार है।

यह कलाकृतियां योग, श्रीमद्भगवद गीता एवं हमारे कई अन्य सांस्कृतिक स्तंभों को जीवंत करती हैं। इनसे भावी पीढ़ियों को हमारे गौरवशाली अतीत से अवगत करवाने के अतिरिक्त, विलुप्त हो रही समकालीन मूर्ति कला को एक नई पहचान भी मिलेगी। इन अनुपम कलाकृतियों को गढ़ने वाले शिल्पियों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

यह पुस्तिका देशभर के मूर्तिकारों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

शिल्पकारों का मनभावन पत्थर

काला भैंसलाना की खूबियां

मूर्तिशिल्प में चिरकाल तक स्थाई रहने वाला पत्थर एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह पत्थर अनेक किस्मों में पाया जाता है। ये मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है, Igneous (आग्नेय), Sedimentary (अवसादी) and Metamorphic (कायान्तरित)। काला संगमरमर एक शैल है जो चूना पत्थर के कायान्तरण का परिणाम है। यह कैलसाइट है, जो कैलशियम कार्बोनेट का स्फटिकीय रूप है। यह मुलायम पत्थर शिल्पकला के लिए उत्तम माना जाता है।

राजस्थान के जयपुर के पास हरियाणा से सटे कोटपुतली के पास भैंसलाना काले पत्थर की सात खानें हैं। इन खानों को 1, 2, 3 नंबर से जाना जाता है। मूर्तिशिल्पों के लिए इन्हीं खानों से यह पत्थर निकाला गया है।

भैंसलाना मार्बल की खूबियां

- इस पत्थर में चार से पांच तरह के रेशे व रंग से शिल्प के सौदंर्य में चार चांद लग जाते हैं।
- काला भैंसलाना मार्बल से बने शिल्प दूर से ही आकर्षित करते हैं।
- कलात्मक दृष्टि से इसमें भरपूर सौंदर्य उभारा जा सकता है।
- इसकी पॉलिश की चमक स्थाई रहती है तथा यह दर्पण के समान चमकता है।
- तीन चार रंगों का संयोजन होने के कारण इसमें आकर्षण पैदा होता है।
- ग्रेनाइट के मुकाबले यह नरम होता है। इससे शिल्प गढ़ने में कम समय लगता है।

- सफेद, गुलाबी, हरा व अन्य बलुवा पत्थर तथा ग्रेनाइट की अपेक्षा इसमें गढ़ी मूर्ति कलात्मक दृष्टि से उच्च मानी जाती है।
- यह बारिश में धुल कर और साफ व सुंदर दिखते हैं। इस पत्थर पर काई भी नहीं जमती।
- इस पत्थर का छोटे से छोटा टुकड़ा तथा रज कण भी प्रयोग में आते हैं।
- यह लोचदार पत्थर कभी अपना रंग नहीं खोता।
- यह पत्थर जल, दाग प्रतिरोधक, विभिन्न रेशों वाला और चमकदार होता है। चांदनी रात में इसका आकर्षण देखते ही बनता है।
- यह पत्थर छोटी-मोटी त्रुटियों को पुनः दुरुस्त करने में भी सक्षम है।
- कैलशियम की मात्रा अधिक होने के कारण इसकी चमक दिन-प्रतिदिन स्थाई होती जाती है।
- यह मूर्तिकला शिविरों में प्रयोग में लाया जाता है। कला विद्यार्थी इस पर जमकर अभ्यास करते हैं।
- इस पत्थर में मुख्य रूप से चार प्रकार के मूर्तिशिल्प, जैसेः जलहरी (शिवलिंग), नंदी, महाकाली, गणेश, शनि देव, अधिक बनते हैं।
- इस पत्थर में मुख्य रूप से बारह ज्योतिर्लिंग बनाए जाते हैं, जैसेः **ज्योचा (डोचा)-** यह पिंड रूप में साधारण शिवलिंग होता हैं। **आरगा-** इसमें पिंड की बजाय केवल आधार होता है। **जलहरी-** यह पूर्ण शिवलिंग होता है। श्रद्वालु इसे वाराणसी में भी विसर्जित करते हैं।
- इसमें कुछ कमियां भी पाई जाती हैं। जिन्हें लोक भाषा में **सापड़ी** कहते हैं। यह बहुत कठोर होती है, जिसे काटने में कई बार औज़ार टूट जाते हैं। **गड़स-** यह एक कठोर गांठ होती है जो शिल्प में बाधा उत्पन्न करती है। **पीलाधार एवं सफेदधार-** इनका प्रयोग मूर्ति में बाधा उत्पन्न करता है। निपुण कलाकार ही इसको अच्छे से प्रयोग में ला सकते हैं। **चटका-** मूर्ति बनाते समय छोटी-छोटी पपड़ियां चटकती रहती हैं। जिससे मूर्तिशिल्प गढ़ने में कठिनाई होती हैं।

AKASH 15

Sound of Growth

WPE (KMP Expressway) - 42 + 800

LHS - Kundli to Manesar

12’ x 4’ x 2’

प्रगति की प्रतिध्वनि

बारह फुट ऊंचे इस शिल्प में विश्व भर में गीता के प्रभाव को दर्शाया है। शिल्प के निम्न तल में समय के चक्र को निरंतर विकास का प्रतीक बनाया गया है। शंख की ध्वनि के रूप में गीता का प्रचार-प्रसार जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। इसके साथ ही सात कमल की पंखुड़ियां, सातों आसमानों के सौंदर्य व पवित्रता के भाव को प्रदर्शित करती हैं। शिल्प के मूल भाव में यह कहने का प्रयास है कि भगदड़ में पड़ी मानव सभ्यता की अधिकतर समस्याओं का निदान 'गीता के उपदेश' में छिपा है।

अमित कुमार

हरियाणा के खरक जाटां रोहतक के ग्रामीण परिवेश से सम्बन्ध रखते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.एफ.ए. मूर्तिशिल्प में डिग्री लेकर आधुनिक मूर्तिशिल्प में नए-नए प्रयोग करने का प्रयास कर रहे हैं।

संघर्ष का आह्लाद

इस बेजोड़ शिल्प में संघर्ष के द्योतक के रूप में एक चक्र बनाया है जो प्रगति का संकेतक भी है। इस चक्र के दोनों तरफ बाधाएं बनाई हैं। चक्र के ऊपर एक आदम आकार शंख बजा रहा है, जो शुभकार्यों के आह्लाद को प्रदर्शित करता है। प्रतीकात्मक चक्र में जीवन की सच्चाई दिखाने का प्रयास किया है। यह संयोजन श्रीमद्भागवत गीता से प्रभावित होकर बनाया गया है, जो हरियाणा की संस्कृति एवं इतिहास की सांकेतिक अभिव्यक्ति को दर्शाती है।

भोला कुमार

भोला कुमार बौद्ध का संबंध गया बिहार से है। कला की पारंपरिक शिक्षा एम.एफ.ए. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से की। वर्तमान में स्वतंत्र कलाकार के रूप में दिल्ली स्थित गढ़ी स्टूडियो में मूर्तिशिल्प पर काम कर रहे हैं।

Success – Sound after Struggle

WPE (KMP Expressway) - 31 + 050

RHS - Kundli to Manesar

12’ x 4’ x 2’

Yoga in Life

WPE (KMP Expressway) - 47 + 400

RHS - Kundli to Manesar

10’ x 4’ x 2’ 6”

योग के आयाम

इस सुंदर शिल्प में योग, शंख और ऐरोबिक का सुंदर समावेश है। इसमें प्रतीकात्मक रूप में एक मत्स्य कन्या को धनुरासन की मुद्रा में शंख के ऊपर प्रदर्शित किया गया है जो योग के सौंदर्य और मन की शक्ति का परस्पर तालमेल प्रस्तुत करता है। मूर्ति में संगीत की लयात्मकता, मन की नीरवता और संकल्प की दृढ़ता के अनायास दर्शन होते हैं।

धर्मबीर

हरियाणा के झज्जर जिले के चिमनी गांव से संबंध रखते हैं। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.एफ.ए. करने के बाद स्वतंत्र रूप से मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में अभिनव प्रयोग कर रहे हैं।

सफलता का शंखनाद

आधुनिक वास्तुकला के सुन्दर प्रमाण के रूप में इस शिल्प में आधुनिक हरियाणा के विकास को महाभारत के शंखनाद के रूप में दर्शाया है। इसमें चिरकाल से अब तक के आध्यात्मिक और वास्तुशिल्प के विकास का सफ़र साफ़ झलकता है। शिल्प में शंख, प्रगति चक्र मांगलिक कार्यों के प्रतीक के रूप में दिखाए गए हैं तथा चारों तरफ स्तंभों के रूप में आधुनिक वास्तुकला को प्रस्तुत किया गया है।

दिनेश कुमार

हरियाणा झज्जर के दिनेश कुमार ने कला शिक्षा के क्षेत्र में रोहतक से बी.एफ.ए. एवं ग्वालियर से एम.एफ.ए. की डिग्री हासिल की है। दिनेश आज प्रदेश के हुनरबाज़ मूर्तिकारों में से एक हैं।

Sound of Success

Contemporary Architecture

WPE (KMP Expressway) - 14 + 400

LHS - Kundli to Manesar

12’ x 5’ x 4’

The Yoga

WPE (KMP Expressway) - 59 + 300

RHS - Kundli to Manesar

11' x 4' 6" x 2' 6"

तन, मन, आत्मा का योजक - योग

इस कलाकृति में त्रि-आयामी योग को शिलांकित किया गया है। इस शिल्प में ज्यामितीय शैली में धनुरासन की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित किया है। हरियाणा में योग के प्रचलन से प्रभावित शिल्पकार ने दर्शाया है कि धनुरासन शारीरिक लोच और मानसिक संधान का परिचायक है। इस शिल्प में योग के माध्यम से स्वस्थ, दीर्घायु का दृढ़तापूर्वक सन्देश दिया गया है।

हरपाल

हरियाणा के सिरसा जिला के शेखुपुरिया गांव से संबंध रखते हैं।
बी.एफ.ए. चण्डीगढ़ तथा एम.एफ.ए. की डिग्री शांति निकेतन
कोलकाता से हासिल करने के बाद हरपाल नूतन प्रयोगों में जुटे हैं।

संस्कृति की अप्रतिम अभिव्यक्ति

मूर्तिकला का अभिनव कौशल हृदय कौशल के शिल्प में साफ़ झलकता है। शिल्प में एक विशाल कछुआ है जो पीछे मुड़कर देख रहा है। कछुआ निरंतरता का प्रतीक है। कछुए की पीठ पर एक त्रिभुजीय आकार है जो श्रीयंत्र और तंत्र से संबंध रखता है। उसके ऊपर अंकुरित बीज प्रदेश की कृषि संस्कृति को दर्शाता है। उसके ऊपर दो शंख हैं, जिनकी गूंज राज्य के विकास को प्रदर्शित करती है। शिल्प के एक तरफ पंछियों के लिए पानी और दूसरी ओर दाने का स्थान भी बनाया गया है।

हृदय कौशल

हृदय कौशल चरखी दादरी हरियाणा से संबंध रखते हैं। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्टस से शिल्प में एम.एफ.ए. की डिग्री हासिल की। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हृदय कौशल कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग हरियाणा में कला अधिकारी (मूर्तिकला) के पद पर कार्यरत हैं।

Growth Entrenched Cultural Growth

WPE (KMP Expressway) - 0 + 760

LHS - Kundli to Manesar

21' x 12' x 8'

Doodh Dahin Ka Khana, Haryana

WPE (KMP Expressway) - 71 + 100

LHS - Kundli to Manesar

12’ x 4’ x 2’

देसां म्ह देस हरियाणा

इस शिल्प में उन्होंने हरियाणा की कृषि संस्कृति की समृद्धि को दर्शाया है, जहां भोजन में दूध-दही का प्रचुरता से प्रयोग विश्व में प्रसिद्ध है। इस शिल्प में तीन प्रकार के अन्न से भरे बोरे प्रदेश के किसानों के परिश्रम को दिखाते हैं। उनके ऊपर दूध के दो ड्रम यह दर्शाते हैं कि हरियाणा का सामजिक परिवेश धन-धान्य से भरपूर है।

ममता केसरी

पटना बिहार से संबंध रखने वाली ममता छत्तीसगढ़ के खैरागढ़ से एम.एफ.ए. की डिग्री हासिल करने के बाद स्वतंत्र रूप से मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

सांस्कृतिक माधुरी

सधे हाथों से गढ़े इस शिल्प में हरियाणा के लुप्त होते वाद्य यंत्रों को संजोया है। शिल्प का मूल फोकस प्रदेश के लुप्त प्राय: वाद्य यंत्र घड़वे पर है। घड़वा हरियाणा के लोकगीतों व लोकसंगीत में प्रयोग होने वाला वाद्य यंत्र है। यह यंत्र प्रदेश के लोगों के चरित्र की सीधी सादी संस्कृति को दर्शाता है।

मोनू

हरियाणा के जींद ज़िले में उचाना कला से संबंध रखने वाले मोनू ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम.एफ.ए. की डिग्री मूर्तिशिल्प में हासिल की है। ये शिल्प के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

Sound of Culture

WPE (KMP Expressway) - 65 + 800

RHS - Kundli to Manesar

12’ x 4’ x 2’

Soul in search of Peace

WPE (KMP Expressway) - 55 + 680

LHS - Kundli to Manesar

11’ x 5’ x 5’

शांति की ओर अग्रसर

इस शिल्प में शंख में बने संकल्पशील मुख के माध्यम से युद्ध की विभीषिका को दर्शाया गया है। शंख के बीच शांतिदूत के रूप में बुद्ध की एक शांत मुखाकृति उकेरी गई है, जो 'सर्वे भवन्तु सुखिन:' का सन्देश दे रही है।

नरेंद्र

हरियाणा के रोहतक जिले के अजायब गांव से संबंध रखने वाले नरेंद्र दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्टस में अभी कला छात्र हैं।

अद्भुत ज्ञान का स्रोत-श्रीमद्भागवद गीता

इस शिल्प में संजय और धृतराष्ट्र के संवाद को मूर्त रूप दिया है। संजय पर्वत की चोटी पर बैठ अपनी दिव्य दृष्टि से धृतराष्ट्र को महाभारत युद्ध की स्थिति बता रहे हैं। युद्ध के मध्य दिए जाने वाले श्रीकृष्ण के गीता उपदेश को उन्होंने अपने शिल्प में प्रदर्शित किया है। शिल्प के तल में सांकेतिक रूप में चक्र, शंख और समय रूपी रथ में से निकलते घोड़े शिल्प में कौतूहल पैदा करते हैं।

नीरज विश्वकर्मा

उत्तरप्रदेश के महू से संबंध रखने वाले नीरज बचपन से संस्कार भारती के कला शिविरों में जाते रहे हैं। वाराणसी से एम.एफ.ए. की डिग्री के बाद स्वतंत्र रूप से शिल्प के क्षेत्र में बखूबी काम कर रहे हैं।

Timeless Knowledge – The Bhagavad Gita
WPE (KMP Expressway) - 78 + 800
RHS - Kundli to Manesar

13’ x 5’ x 2’ 6”

Akashya Vat Variksh at Jyotisar
WPE (KMP Expressway) - 20 + 420
LHS - Kundli to Manesar

9’ x 7’ 6” x 3’

अक्षय वट-निरंतरता का उपदेश

यह कलाकृति हरियाणा की लोक संस्कृति एवं महाभारत के इतिहास को दर्शाती है। इस शिल्प में एक वटवृक्ष की परिकल्पना है, जिसके नीचे ज्योतिसर कुरुक्षेत्र की सीढ़ियां बनाई हैं, इसके मध्य में एक खूबसूरत छोटा सा शिव मंदिर बनाया है। भावों के अनुरूप कलाकार की परिकल्पना है कि अर्जुन ने युद्ध से पूर्व भगवान शिव की आराधना की थी। इसी स्थान पर श्री कृष्ण द्वारा उपदेश देकर अर्जुन के अंतर्द्वंद्व को शांत कर केवल कर्म करने का संदेश दिया था। साथ ही मंदिर के नीचे विशाल सरोवर बनाया है, जो हरियाणा की पूजनीय परम्पराओं को दर्शाता है।

नेमा राम

नेमा राम राजस्थान के सुमेरपुर के पाली गांव से संबंध रखते हैं। नाथद्वारा से एम.ए. ड्राइंग एंड पेंटिंग की डिग्री हासिल करने के बाद स्वतंत्र रूप से मूर्तिशिल्पों का निर्माण कर रहे हैं।

जीवन एक चक्रव्यूह

हरियाणा की पुरातन घटनाओं से जुड़े इस शिल्प में चक्रव्यूह की घटना को प्रदर्शित किया है। शिल्प के ऊपर अभिमन्यु द्वारा चक्रव्यूह को भेदने की स्थिति को दर्शाया है। चक्रव्यूह को भेदने की सफलता को शंख ध्वनि के रूप में तथा वीरगति को प्राप्त होते रूप को वक्राकार स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया है। शिल्प का सौंदर्य अप्रितम है।

प्रदीप कुमार

हरियाणा के हिसार जिले में किरतान गांव के किसान परिवार से संबंध रखते हैं। कुरुक्षेत्र से कला शिक्षा लेने के साथ दिल्ली से एम.एफ.ए. की डिग्री हासिल करने के बाद आज स्वतंत्र मूर्तिकार के रूप में काम कर रहे हैं।

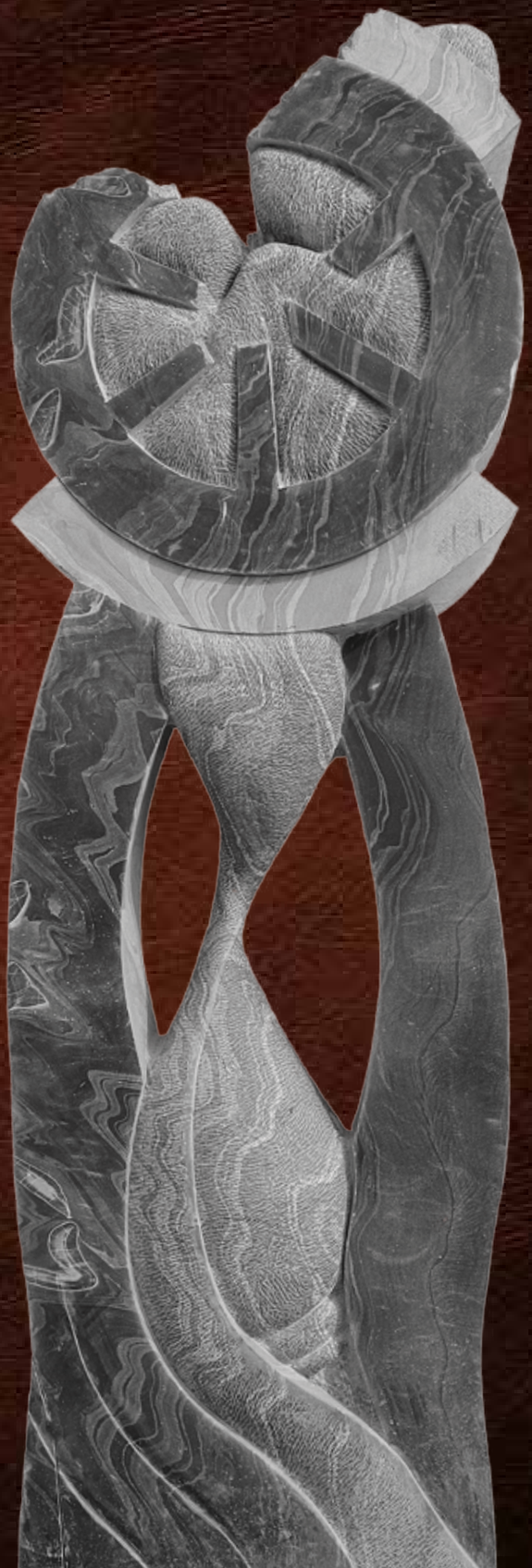

The Chakravyuh

WPE (KMP Expressway) - 10 + 800

RHS - Kundli to Manesar

12’ 6” x 4’ x 2’

Agri-Culture

WPE (KMP Expressway) - 73 + 400

RHS - Kundli to Manesar

16’ 6” x 4’ x 3’

कृषि और संस्कृति

इस शिल्प में ग्रामीण परिवेश से संस्कृति की उत्पत्ति को दिखाया है कि किस प्रकार एग्रीकल्चर से कल्चर का चोली-दामन का संबंध है। शिल्प में एक किसान पकी हुई फसल को अपने हाथ में लेकर खुशी ज़ाहिर कर रहा है। यह सांकेतिक रूप से राज्य की प्रगति को भी दर्शा रहा है। 'अन्न से मन प्रसन्न' की अभिव्यक्ति परिलक्षित हो रही है। कृति का ऊर्ध्वगामी स्तंभ रूप जीवन की कर्मठता और समृद्धि के उत्कर्ष को सांकेतिकता दे रहा है।

राकेश कुमार

राकेश कुमार दिल्ली के जोंती गांव से संबंध रखते हैं। इन्होंने दिल्ली कालेज आफ आर्टस से मास्टर डिग्री की उपाधि हासिल की है।

एकाग्रता - लक्ष्य प्राप्ति का साधन

इस शिल्प के मध्य में एक आंख के साथ मछलियों के युगल को दर्शाया है, जो नवजीवन की शुरुआत का प्रतीक है। इस शिल्प में विशेष रूप से आंख को दोनों मछलियों के मध्य में बनाया गया है जो दर्शाता है कि हम एकाग्रता, सहनशीलता व सहयोग के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

रेणु बाला

पंजाब के पठानकोट से संबंध रखने वाली रेणु बाला ने जयपुर से कला में मास्टर डिग्री हासिल की है।

Swayamvar the Target
WPE (KMP Expressway) - 62 + 700
LHS - Kundli to Manesar

9’ x 4’ 6” x 3’

The Abhimanyu in Chakravyuh

WPE (KMP Expressway) - 30 + 850

LHS - Kundli to Manesar

11' x 4' x 2'

चक्रव्यूह में प्रवेश

वीररस से परिपूर्ण इस शिल्प में महाभारत युद्ध में किस प्रकार अभिमन्यु युद्ध करते-करते वीरगति को प्राप्त हुए, उसका शरीर को दो पहियों, मुख को गीता और शीर्ष को शंख के रूप में प्रदर्शन किया गया है, जो अभिमन्यु की अमरता को दर्शाता है।

रोकेश कुमार

राजस्थान के उदयपुर से संबंध रखते हैं। उदयपुर से एम.ए. ड्राइंग एंड पेंटिंग की डिग्री हासिल करने के बाद स्वतंत्र रूप से मूर्तिशिल्प के क्षेत्र में अग्रणीय हैं।

नगर देवता - दादाखेड़ा

इस शिल्प में हरियाणा की सांस्कृतिक गरिमा को दर्शाते हुए बताया है कि जब किसी गांव की स्थापना की जाती है तो सर्वप्रथम क्षेत्रपाल के रूप में दादाखेड़ा की स्थापना की जाती है। दादाखेड़ा को गांव की सुख शांति और समृद्धि के प्रतीक रूप में पूजा जाता है। इसे कुछ क्षेत्रों में नगरखेड़ा भी कहा जाता है। गांव के सभी मांगलिक कार्यों में सबसे पहले दादाखेड़ा की पूजा की जाती है। ऐसी आस्था है कि दादाखेड़ा पूरे गांव की रक्षा करते हैं। शिल्प में आस्था के प्रतीक एक बलशाली खागड़ (बैल) को दिखाया है।

संजीव कुमार

हरियाणा के जींद जिले में राजगढ़ धोबी गांव से संबंध रखने वाले संजीव कुमार जो कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में अंतिम वर्ष के छात्र हैं।

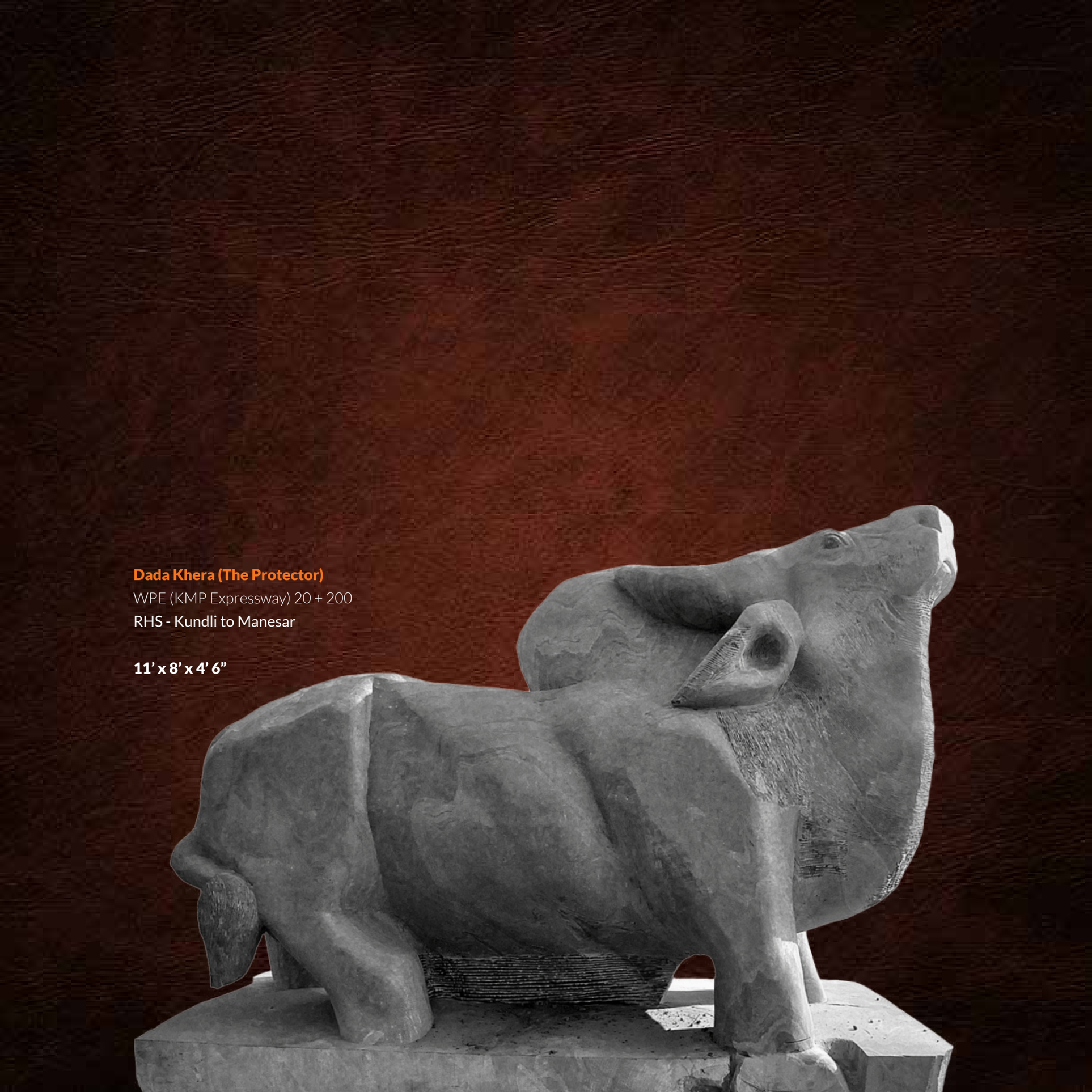

Dada Khera (The Protector)

WPE (KMP Expressway) 20 + 200

RHS - Kundli to Manesar

11’ x 8’ x 4’ 6”

The Cultural Unity

WPE (KMP Expressway) - 8 + 100

LHS - Kundli to Manesar

11' x 4' 6" x 2' 6"

सांस्कृतिक एकात्मता

खूब मेहनत और बारीकी से रचे इस शिल्प में राज्य की सांस्कृतिक एकात्मता को ज्यामितीय अवधारणा के आधार पर प्रस्तुत किया है। इस शिल्प में शिव की तीसरी आंख बनाई है जो सभी को समान रूप से एक जैसा अस्तित्व प्रदान कर रही है। पीछे सूर्य की किरणों के साथ हरियाणा के विकास को भी प्रदर्शित किया गया है।

एस. शिवा कुमार

चेन्नई के महाबलीपुरम् में मथुर गांव से संबंध रखने वाले एस. शिवा कुमार ने चेन्नई फाईन आर्टस कॉलेज से मास्टर डिग्री प्राप्त की है।

मेरा नौ डांडी का बीजणा

हरियाणा के सामजिक परिवेश के ताने-बाने में बुने गए इस शिल्प में प्रसिद्ध लोक गीत से प्रेरित होकर हरियाणवी कला एवं संस्कृति को प्रदर्शित किया है। इसमें दो विशाल पंखियों के साथ लगभग लुप्त प्राय हरियाणवी परिधान में एक महिला को बोरला, चूंदड़ी, बाजणा, दामण पहने दर्शाया है। शिल्प में रेवाड़ी के ठठेरा-बर्तनों के रूप में दामण के साथ टोकणी को भी समाहित किया है। पूरे शिल्प में अद्भुत सौंदर्य है।

डॉ. स्नेहलता प्रसाद

डॉ. स्नेहलता प्रसाद का तेलंगाना से संबंध है। इन्होंने कला में डाक्टरेट की डिग्री जयपुर विश्वविद्यालय से हासिल की तथा अनेक देशों में कला प्रदर्शनी लगा चुकी हैं।

Mera No Daandi Ka Bajna
WPE (KMP Expressway) - 0 + 900
RHS - Kundli to Manesar

16’ x 5’ x 3’ 6”

The Expression of Culture

WPE (KMP Expressway) - 14 + 820

RHS - Kundli to Manesar

10’ x 8’ x 1’ 6”

समृद्धि एवं संस्कृति

इस शिल्प में हरियाणा के लुप्त प्राय राज्य पक्षी 'काला तीतर' को चिंता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसमें काले तीतर को बचाने का बहुत साफ़ संदेश भी दिया है। एक वर्गाकार चट्टान में एक तीतर परिवार को हरियाणवी बीजणे (हाथ पंखे) के साथ समाहित किया है, जिसका सौंदर्य अप्रतिम है। पंखे की शीतल हवा और तीतर के मुख पर शांत भाव समावेशी संस्कृति की बयार बहा रहे हैं।

डॉ. सुषमा यादव

डॉ. सुषमा यादव का हरियाणा के रेवाड़ी ज़िले के मांढीया कलां गांव से संबंध है। दिल्ली विश्वविद्यालय से कला में डाक्टरेट की डिग्री हासिल की। सुषमा लगभग 15 देशों में अपनी कला को प्रदर्शित कर चुकी हैं।

योग और प्रकृति

ज्ञान, कला और संस्कृति के साथ योग को जोड़कर गढ़ा गया यह एक अद्भुत शिल्प है। हरियाणा प्राचीन काल से योग में पारंगत रहा है, अनेक ऋषिमुनि, यति, सिद्ध हस्तियां हरियाणा को योग का उपहार देते रहे हैं। इसमें प्रकृति, संस्कृति तथा योग का अदभुत संगम है। वटवृक्ष की शाखाओं के नीचे प्रकृति के सानिध्य में योग एवं वास्तुकला का अद्भुत संयोजन इस शिल्प में साफ़ देखा जा सकता है। पद्मासन में ध्यान मग्न मानवाकृति द्वारा आध्यात्मिकता की ऊंचाइयों को दर्शाया गया है।

सुनील कुमार

हरियाणा राज्य के नारनौल में बुंगारखा गांव के आंचल में ही कला का सुमार्ग मिला। जयपुर से मास्टर डिग्री करने के बाद अब स्वतंत्र रूप में कार्य करने के साथ-साथ प्राइवेट अध्यापन की नौकरी भी कर रहे हैं।

The Yoga under Nature

WPE (KMP Expressway) - 44 + 100

LHS - Kundli to Manesar

12’ 6” x 8’ x 2’ 6”

Reflections of Yoga

WPE (KMP Expressway) - 10 + 200

LHS - Kundli to Manesar

13’ x 6’ x 2’ 6”

योग का अभिरूप

बेहद सुरुचि से तराशे इस शिल्प में पानी पर चक्रासन करती हुई एक महिला को दर्शाया है जिसकी नाभि से सौंदर्य रूप में कमल की कोंपल निकल रही है। योग के माध्यम से रूप की छाया को जल में यथावत उतारने का प्रयास किया गया है और चंचल मछलियों से जीवन के सौंदर्य एवं गतिशीलता को प्रासांगिक किया है।

तुलसी राम

हरियाणा के फरीदाबाद से संबंध रखने वाले तुलसी राम दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्टस से एम.एफ.ए. स्कल्पचर की डिग्री लेकर आज मूर्तिशिल्प को विकसित कर रहे हैं।

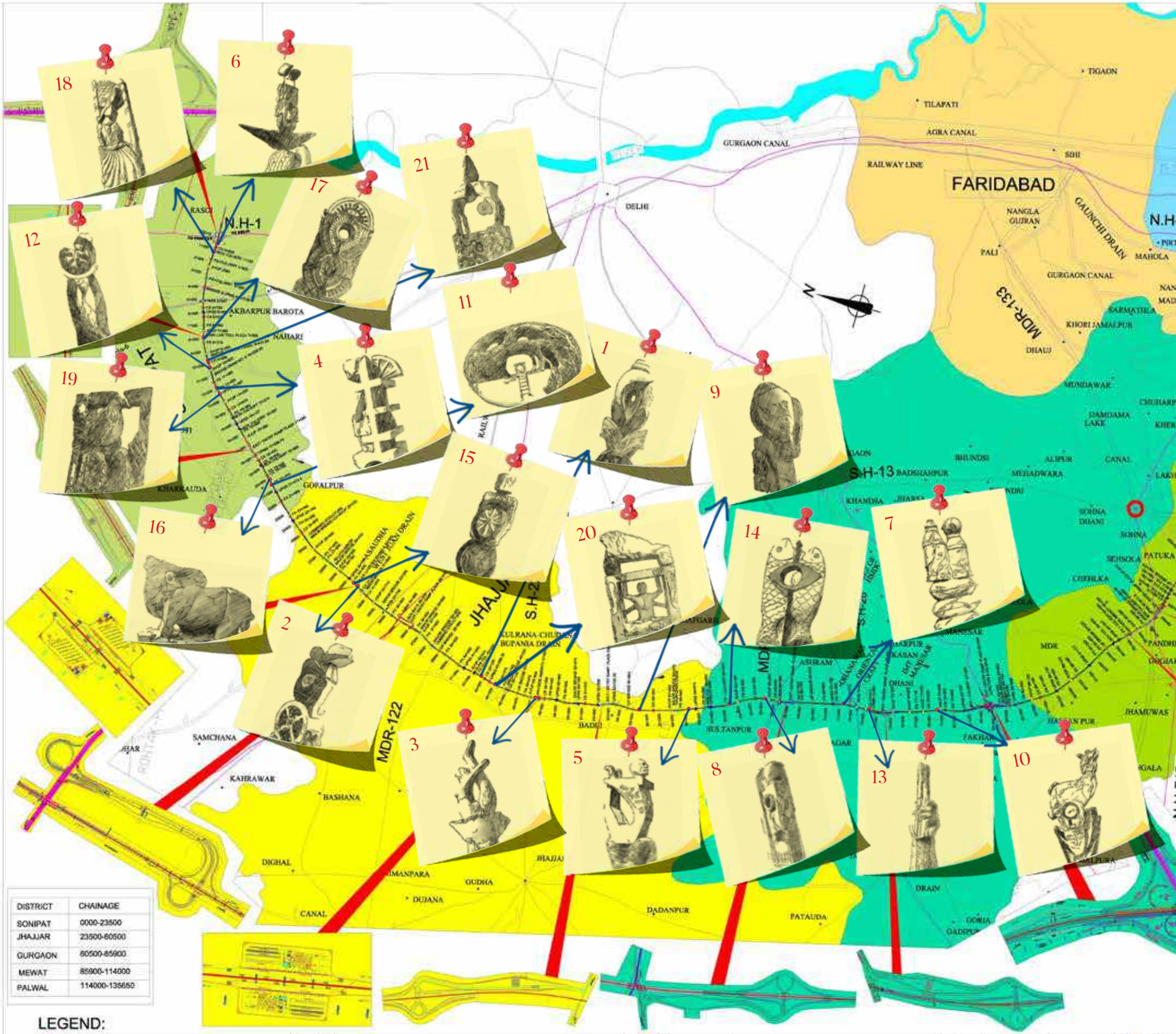

DISTRICT	CHAINAGE
SONIPAT	0000-23500
JHAJJAR	23500-60500
GURGAON	60500-85900
MEWAT	85900-114000
PALWAL	114000-135650

LEGEND:

PX	PEDESTRIAN CROSSING (4x2.5m Ht.)	AVUP	AGRICULTURAL VEHICULAR UNDERPASS (7x3.5m Ht.)	UPMS	UNDERPASS MULTI SPAN (2x27.8x5.5m Ht.)	BRIDGE		UP
CX	CATTLE CROSSING (4x3m Ht.)	UPSS	UNDERPASS SINGLE SPAN (10x5m Ht.)	BOX CULVERT		EXIT/ENTRY TOLL PLAZA		GS

Concessionaire:
KMP EXPRESSWAYS LTD.

DPR Consultant:
Halcrow Consulting India Limited
Halcrow

Structural Consultant:

Client:
HARYANA STATE INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

Independent Consultant:

Project:
DEVELOPMENT OF 4/6 LANE KMP EXPRESSWAY IN THE STATE OF HARYANA, INDIA ON BOT BASIS

Rev	By	Chkd	Apprvd	Date	Description
01	AS	MCH	BSP	10/03/06	Added new district Palwal as per Haryana Govt.

Details of Sculptures fixed along Kundli Manesar Section on KMP with thier Locations & Sizes

S. No.	Title of Work	Chainage	Size
1.	Sound of Growth	42+800 LHS	12' x 4' x 2'
2.	Success – Sound after Struggle	31+050 RHS	12' x 4' x 2'
3.	Yoga in Life	47+400 RHS	10' x 4' x 2' 6"
4.	Sound of Success Contemporary Architecture	14+400 LHS	12' x 5' x 4'
5.	The Yoga	59+300 RHS	11' x 4' 6" x 2' 6"
6.	Growth Entrenched Cultural Growth	0+760 LHS	21' x 12' x 8'
7.	Doodh Dahin Ka Khana, Haryana	71+110 LHS	12' x 4' x 2'
8.	Sound of Culture	65+800 RHS	12' x 4' x 2'
9.	Soul in search of Peace	55+680 LHS	11' x 5' x 5'
10.	Timeless Knowledge – The Bhagavad Gita	78+800 RHS	13' x 5' x 2' 6"
11.	Akashya Vat Variksh at Jyotisar	20+420 LHS	9' x 7' 6" x 3'
12.	The Chakravyuh	10+800 RHS	12' 6" x 4' x 2'
13.	Agri-Culture	73+400 RHS	16' 6" x 4' x 3'
14.	Swayamvar the Target	62+700 LHS	9' x 4' 6" x 3'
15.	Abhimanyu in the Chakravyuh	30+850 RHS	11' x 4' x 2'
16.	Dada Khera (The protector)	20+200 RHS	11' x 8' x 4' 6"
17.	The Cultural Unity	8+100 LHS	11' x 4' 6" x 2' 6"
18.	Mera No Daandi Ka Bajna	0+900 RHS	16' x 5' 3' 6"
19.	The expression of culture	14+820 RHS	10' x 8' 1' 6"
20.	The Yoga under Nature	44+100 LHS	12' 6" x 8' x 2' 6"
21.	Reflections of Yoga	10+200 LHS	13' x 6' x 2' 6"

DETAILS OF SCULPTORS

Sr. No.	Name of sculptor	State	Title of Work
1.	Amit Kumar	Haryana	Sound of Growth
2.	Bhola Kumar	Bihar	Success – Sound after Struggle
3.	Dharmbir	Haryana	Yoga in Life
4.	Dinesh Kumar	Haryana	Sound of Success Contemporary Architecture
5.	Harpal	Haryana	The Yoga
6.	Hirday Kaushal	Haryana	Growth Entrenched Cultural Growth
7.	Mamta Keshri	Bihar	Doodh Dahin Ka Khana, Haryana
8.	Monu	Haryana	Sound of Culture
9.	Narender	Haryana	Soul in search of Peace
10.	Neeraj Vishwakarma	Uttar Pradesh	Timeless Knowledge – The Bhagavad Gita
11.	Nema Ram	Rajasthan	Akashya Vat Variksh at Jyotisar
12.	Pradeep Kumar	Haryana	The Chakravyuh
13.	Rakesh Kumar	New Delhi	Agri-Culture
14.	Renu Bala	Punjab	Swayamvar the Target
15.	Rokesh Kumar	Rajasthan	Abhimanyu in the Chakravyuh
16.	Sanjeev Kumar	Haryana	Dada Khera (The protector)
17.	S. Siva Kumar	Tamil Nadu	The Cultural Unity
18.	Dr Sneha Lata	Telangana	Mera No Daandi Ka Bajna
19.	Dr Sushma Yadav	Haryana	The expression of culture
20.	Sunil Kumar	Haryana	The Yoga under Nature
21.	Tulsi Ram	Haryana	Reflections of Yoga

PARTICIPATED IN SYMPOSIUM

Address	Mobile No.
Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana	+91-9812372864
Turi Bujurg Magadh University, Bodhgaya, Bihar	+91-9911836584
V.P.O. Chimni, Teh- Beri, Jhajjar, Haryana	+91-8607894787
House No. 1195/21, Prem Nagar near Hafed Chowk, Rohtak, Haryana	+91-8607777272
Village Shekhupuria, P.O. Panjuana, Sirsa, Haryana	+91-7289970031
House No. 250, Sector-14, Panchkula, Haryana	+91-8968697007
Raju Medical Hall, Main Road, Bibigunj, Danapur Cantt, Patna, Bihar	+91-9693827269
National Agro Industries, By Pass Road, Uchana	+91-8950175004
V.P.O. Ajaib, Teh-Meham, Rohtak, Haryana	+91-7982504474
Village - Pause , Post-Gontha, Mau, Uttar Pradesh	+91-9958017293
Shiv Colony, Old Jakhoda Road, Sumerpur, Pali, Rajasthan	+91-9829497956
V.P.O. Kirtaan, Hissar, Haryana	+91-9812277980
House No. 3, Village & VPO: Jaunti, Delhi	+91-9716608157
Lamini Ward No-9, Pathankot, Punjab	+91-8696202236
House No. 4/44, HBC Goverdhan Vilas, Udaipur, Rajasthan	+91-9799967878
V.P.O. Sulhera, Jind, Haryana	+91-8059164289
C16/3 Padhmanapa Nagar, Main Road, Choolaimedu, Chennai	+91-9790978485
Villa No. 28, Tulsi Garden, Yapral, Sainikpuri, Secunderabad, Hyderabad	+91-8309889794
A-5/234, Paschim Vihar, New Delhi	+91-9891313544
6-Madhura Enclave, Jagatpura Road, Malviyanagar, Jaipur	+91-9509387576
E-269, S.G.M. Nagare, Faridabad, Haryana	+91-9873131505

विषयवस्तु परामर्श

श्री रामबिलास शर्मा
कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग तथा
शिक्षामंत्री, हरियाणा

परिकल्पना एवं कार्यशाला निर्देशन

श्रीमती धीरा खंडेलवाल
अतिरिक्त मुख्य सचिव
कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग

श्री राजेश खुल्लर
अतिरिक्त मुख्य सचिव-मुख्यमंत्री
अध्यक्ष-हरियाणा राज्य औद्योगिक और
बुनियादी ढांचा विकास निगम लिमिटेड

भाषा शिल्प

श्री महेश्वर शर्मा
निदेशक कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग

विषय वस्तु

श्री हृदय कौशल
कला अधिकारी (मूर्तिकला), कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग

KalaSH
कला एवं संस्कृति हरियाणा

कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग, हरियाणा

हरियाणा राज्य औद्योगिक और बुनियादी ढांचा विकास निगम लिमिटेड